जल का वरदान

शशिकान्त सिन्हा
जल प्रौद्योगिकी केंद्र, भा.कृ.अनु.प.- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली
ईमेल : monalishapramanik@gmail.com

लहलहाती फसलें, दुधारू नस्लें,
झूमते किसान, उनके पुलकते अरमान।
ये क्या संभव था बतलाएँ,
मिला न होता **जल का वरदान।।**

बाग-बगीचे, बहते झरने,
या फैले रेत में हो मरूद्यान।
ये क्या संभव था बतलाएँ,
मिला न होता **जल का वरदान।।**

बादल बरसे, सरवर हरषे,
धूल-धुएँ पर लगे पूर्ण विराम।
ये क्या संभव था बतलाएँ,
मिला न होता **जल का वरदान।।**

बर्षा-जल संचें, मितव्ययिता बरतें,
जल-प्रशिक्षण का चले अभियान।
ये क्या संभव है बतलाएँ,
शाश्वत तभी **जल का वरदान।।**